

॥ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

Sem-V, Sec-A, U-III

सांमनस्यसूक्तम्

(अथर्ववेदः ३यः काण्डः, ६४ः अनुवाकः, ३० सूक्तम्)

(ऋषिः अथर्वा। देवता – चन्द्रमाः)

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।

अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोमि॥५॥

अन्वयसहितवङ्गानुवादः – ज्यायस्वन्तः (ज्योर्षदेर सम्मानकारी) चित्तिनः (उत्तम चित्तयुक्त) संराधयन्तः (उत्तम सिद्धिलाभकारी) सधुराः चरन्तः (समान कार्येण वाहक, अग्रे प्रसरणकारी) मा वि यौष्ट (तोमरा पृथक् हवे ना, विरोध करवे ना) अन्यः अन्यस्मै वल्गु वदन्तः एत (एके अन्ये प्रति प्रेमपूर्वक भाषण करते करते एगिये यावे) वः सध्रीचीनान् (तोमাদের पुरुषार्थयुक्त) संमनसः कृणोमि (समान मननयुक्त करछि)।

समानी प्रपा सह वौऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वौ युनज्मि।

सम्यश्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः॥६॥

अन्वयसहितवङ्गानुवादः – प्रपा समानी (तोमাদের जलपानेण स्थान एक होक) वः अन्नभागः सह (तोमাদের अन्नभागउ समान होक) समाने योक्त्रे वः सह युनज्मि

(তোমাদের এক স্নেহপাশে আবদ্ধ করছি) সম্যস্ব: অগ্নি সপর্যত (তোমাদের উপাসনা কর্মও এক হোক) অমিত: নাभि অরা: ইব (সকল দিক থেকে পঙ্ক্তি গুলি যেমন চক্রে কেন্দ্রে এসে যুক্ত হয়)।

स॒धी॒ची॒ना॒न्वः॒ सं॒म॒न॒स॒स्कृ॒णो॒म्येक॑श्रु॒ष्टी॒न्त्स॒ं॒व॒न॒ने॒न् सर्वा॑न्।

दे॒वा इ॒वा॒मृतं॑ रक्ष॒माणाः॑ सा॒य॒प्रा॒तः सौ॒म॒न॒सो वो॑ अस्तु॥७॥

অন্বয়সহিতবঙ্গানুবাদ: – সংবননেন ব: সর্বাণ্ (পরস্পরের উদ্দেশ্যে সেবাভাবযুক্ত তোমাদের সকলের প্রতি) সধীচীনান্ সংমনস: একশ্রুষ্ঠীন্ কৃণোমি (তোমাদের কে সমান পুরুষার্থযুক্ত, উত্তম মননযুক্ত ও একই নেতার আঞ্জাতে কার্য সম্পাদনকারী রূপে গঠন করছি) অমৃতং রক্ষমাণা: (অমৃত রক্ষাকারী) দেবা: ইব (দেবতাদের মত) সাযং প্রাত: (সকাল সন্ধ্যা) ব: সৌমনস: অস্তু (তোমাদের চিও প্রসন্ন হোক)।

ব্যাক্ষ্য – অস্তু তাবৎ পশ্চমে মন্ত্রে জাত্যা জনেন সহ ব্যবহারং কীদৃশমাচরেৎ ইতি উপদেশ: ক্রিয়তে। অথোচ্যতে জ্যায়স্বন্ত: ইতি অর্থাৎ জ্যেষ্ঠানাং সম্মানং প্রদর্শয়েৎ। কদাপি পরস্পরং ন বিবেদ: আনেতব্যম্। একনেতৃণাম্ আশ্রয়ে হি স্থাতব্যম্। পরস্পরং মিলিত্বা হি কার্যাণি সম্পাদয়েৎ, সিদ্ধিলাভশ্চ কুর্যাৎ। পরস্পরং প্রতি ভাষণসময়ে মধুরাণি বাক্যানি প্রযুজ্যতাং। তথাহি মনুষ্যাণাং পরীক্ষা তेषাং কৃতকার্যং দৃষ্ট্বা এব ক্রিয়তে। অত: যদা তে কার্যেষু যুক্তা ভবন্তি তদা তত্র পরস্পরং মিলিত্বা বিরোধহীনতয়া এব কার্যাণি করেয়ু: ইত্যাশয়:। পুন: উপদেশং কৰোতি অস্মাকং অন্নস্য জলস্য চ ভোগস্থানং সমানমেব ভবেৎ।

उपासनादिकार्याणि अपि समानानि भवेयुः। अस्य दृष्टान्तमेकं प्रदयता आह यथा चक्रस्य
पङ्क्तयः तस्य चक्रस्य केन्द्रे यंयुक्ता स्युः तद्वत् अस्माकं जाती चक्रस्य इव वयं तत्र
पङ्क्तिसदृशः अतः अस्माकमौचित्तं सदा केन्द्रस्थितराष्ट्रनायकस्य अनुसरणम्। अथ अन्तिमे
मन्त्रे उच्यते एकनेतृणाम् आश्रये स्थित्वा वायं सर्वे दत्तकार्यानि प्रतिपालयामः। परन्तु तस्य
नेतुः औचित्यं निःस्वार्थरूपेण जनगणस्य सेवाकार्यम्। जनसेवैव मनुष्याणां श्रेष्ठं राष्ट्रकार्यं
भवति। वेदस्य तावत् सिद्धान्तः एषः ऋतुमयोऽयं पुरुषः अर्थात् मानवाः कर्मयुक्ताः
भवन्ति। अतः कर्मसम्पादनकार्यं यथा निर्विघ्नतया सुष्ठु च भवति तस्य कृते ऐक्यता
आवश्यका। तदर्थं अस्य सूक्तस्य उपदेशाः मानवजीवने अत्यन्तगुरुत्वपूर्णाः विद्यन्ते इति
शम्।